



डॉ राम मनोहर लोहिया के विचार और उनकी वर्तमान भारतीय राजनीति में प्रासंगिकता

Vijai Luxmi Yadav

Assistant professor political science

Ramabai Government women p.g. college, Akbarpur Ambedkar Nagar, u.p.224122

डॉ. राम मनोहर लोहिया भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी और एक विचारशील समाजवादी नेता थे, जिनके विचार आज भी भारतीय राजनीति में गहरे प्रभाव डालते हैं। उनकी विचारधारा सामाजिक समानता, आर्थिक न्याय, और जनतांत्रिक मूल्यों पर आधारित थी, जिसने देश के राजनीतिक परिदृश्य को दिशा दी। वर्तमान भारतीय राजनीति में बढ़ती असमानता, सामाजिक विभाजन, और जनसाधारण की आवाज को बुलंद करने की आवश्यकता को देखते हुए, लोहिया जी के विचार न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि एक मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। इस शोध पत्र में हम डॉ. राम मनोहर लोहिया के प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक विचारों का विश्लेषण करेंगे और समझेंगे कि वे आज के भारत में किस प्रकार सार्थक और प्रेरणादायक हैं।

1. डॉ राम मनोहर लोहिया का परिचय

डॉ राम मनोहर लोहिया भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण नेता, समाजवादी विचारक और राजनेता थे। उनका जन्म 23 मार्च 1910 को ब्रिटिश भारत के अंबेडकर नगर जिले में हुआ था। लोहिया न केवल स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय थे, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज और राजनीति में समकालीन और प्रगतिशील बदलावों के लिए गहन विचार प्रस्तुत किए। वे समाजवाद के प्रबल समर्थक थे और उनका मानना था कि सामाजिक बराबरी, आर्थिक न्याय और जाति व्यवस्था का उन्मूलन भारत के विकास के लिए अनिवार्य है। लोहिया ने अपने लेखन, भाषणों और राजनीतिक आंदोलनों के माध्यम से दलितों, पिछड़ों और शोषित वर्गों के अधिकारों के लिए आवाज उठाई। उनकी विचारधारा आज भी भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय, समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। लोहिया के सिद्धांतों ने कई राजनीतिक दलों और आंदोलनों को प्रभावित किया है, जो आज भी उनकी नीतियों और विचारों को अपनाकर सामाजिक और राजनीतिक बदलाव की दिशा में काम कर रहे हैं।

2. डॉ लोहिया के मुख्य राजनीतिक विचार

डॉ राम मनोहर लोहिया भारतीय राजनीति के एक महत्वपूर्ण विचारक और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, जिनके राजनीतिक विचार आज भी भारतीय समाज और राजनीति में गहन प्रभाव रखते हैं। उनके मुख्य राजनीतिक विचारों का केंद्र सामाजिक न्याय, समानता, और आर्थिक स्वतंत्रता था। लोहिया जी ने जाति-पाति, वर्ग भेद और सामाजिक असमानताओं के खिलाफ आवाज उठाई और हमेशा एक समावेशी और न्यायसंगत समाज की स्थापना पर जोर दिया। उनका मानना था कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है, बल्कि आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। वे भ्रष्टाचार, भेदभाव और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे। डॉ लोहिया ने छोटे किसानों, मजदूरों, और कमजोर वर्गों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया तथा उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुधारने की बात कही। उन्होंने 'समाजवाद का भारतीय स्वरूप' प्रस्तुत किया, जिसमें लोकतंत्र, समानता, और संसाधनों का न्यायसंगत वितरण प्रमुख थे।

डॉ लोहिया के विचारों में भाषा के माध्यम से सामाजिक एकता और सांस्कृतिक विविधता की सराहना भी मिलती है। वे बहुभाषावाद के समर्थक थे और मानते थे कि यह भारत की ताकत है। उनकी आलोचना केंद्रित थी केंद्रीकरण और सत्ता के केंद्रीकृत स्वरूप पर, जिसके कारण समाज के कमजोर वर्ग पीछे छूट जाते हैं।

इस प्रकार, डॉ राम मनोहर लोहिया के राजनीतिक विचार सामाजिक न्याय, समानता, और लोकतंत्र की गहरी समझ पर आधारित थे, जो आज भी भारतीय राजनीति में विशेष प्रासंगिकता रखते हैं। आधुनिक भारत में उनकी विचारधारा दलित अधिकारों, सामाजिक समरसता, और आर्थिक न्याय के मुद्दों पर चर्चा के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

3. सामाजिक समानता और न्याय के प्रति लोहिया का दृष्टिकोण

डॉ. राम मनोहर लोहिया समाज में सामाजिक समानता और न्याय को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे। उनका मानना था कि बिना सामाजिक समानता के किसी भी राष्ट्र का वास्तविक विकास संभव नहीं है। उन्होंने जाति, वर्ग, और आर्थिक असमानताओं के खिलाफ आवाज उठाई और एक ऐसा समाज बनाने का संकल्प लिया जहाँ हर व्यक्ति को समान अवसर और अधिकार मिलें। लोहिया जी का दृष्टिकोण केवल शाब्दिक बराबरी तक सीमित नहीं था, बल्कि वे सामाजिक और आर्थिक न्याय की गहरी पैठ चाहते थे, ताकि पिछड़े और वंचित वर्गों को सशक्त बनाया जा सके।

आज के समय में, जब भारतीय राजनीति में सामाजिक असमानता और जातिगत विभाजन अभी भी व्यापक रूप से देखे जा सकते हैं, लोहिया के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। वे हमें याद दिलाते हैं कि विकास की प्रक्रिया में सामाजिक न्याय को प्राथमिकता

देनी चाहिए और केवल आर्थिक प्रगति ही नहीं, बल्कि समानता की स्थापना भी जरूरी है। उनकी सामाजिक समानता की अवधारणा आज भी दलित, आदिवासी, और अन्य पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में काम कर रही है। राजनीतिक दल और नीतिगत निर्माता यदि लोहिया के इन मूल्यों को अपनाएं, तो भारतीय लोकतंत्र और समाज अधिक समावेशी और न्यायसंगत बन सकता है।

4. आर्थिक नीतियों में लोहिया की सोच

डॉ राम मनोहर लोहिया की आर्थिक नीतियाँ सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांतों पर आधारित थीं। वे आर्थिक विकास को केवल संख्या में वृद्धि नहीं, बल्कि समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों के उत्थान के माध्यम से मापते थे। उनकी सोच यह थी कि आर्थिक नीतियाँ ऐसी होनी चाहिए जो समाज के कमजोर तबकों को सशक्त करें और सत्ता तथा संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित करें। लोहिया जी ने केंद्रीकृत आर्थिक व्यवस्था की आलोचना की और छोटे उद्योगों, सहकारिता तथा स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देने की बात की। उन्होंने बड़े पूंजीपतियों और सामंती शक्तियों के प्रभाव को कम करने के लिए पुनर्वितरण की नीतियों पर जोर दिया। उनका मानना था कि बिना सामाजिक और आर्थिक समानता के लोकतंत्र का वास्तविक स्वरूप संभव नहीं है।

वर्तमान भारतीय राजनीति में उनकी यह सोच तब और अधिक प्रासंगिक हो जाती है जब देश में आर्थिक असमानताएँ बढ़ रही हैं और सामाजिक वर्गों के बीच तनाव भी गहरा रहा है। आज भी उनकी आर्थिक दृष्टि हमें यह याद दिलाती है कि विकास का लक्ष्य सिर्फ आर्थिक वृद्धि नहीं, बल्कि सभी वर्गों के लिए समावेशी और न्यायसंगत समृद्धि होना चाहिए। उनकी नीतियाँ आज के संदर्भ में गरीबी उन्मूलन, ग्रामीण विकास, और सामाजिक सुरक्षा के मामलों में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती हैं। इस प्रकार, डॉ लोहिया की आर्थिक सोच वर्तमान राजनीति में सामाजिक न्याय और समानता की मांग को मजबूत करती है।

5. लोहिया की विचारधारा में जाति और धर्म का स्थान

डॉ राम मनोहर लोहिया की विचारधारा में जाति और धर्म का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और समकालीन राजनीति के लिए आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और धार्मिक आधार पर होने वाले विभाजन को एक बड़ी सामाजिक बाधा माना। उनके अनुसार, जाति और धर्म के नाम पर होने वाली असमानता और अन्याय ने देश की प्रगति को रोक रखा है और समाज में गहरी दरारें पैदा की हैं। लोहिया जी ने जाति व्यवस्था के खिलाफ सशक्त आवाज़ उठाई और इसे सामाजिक असमानता का मुख्य कारण बताया। वे मानते थे कि जाति-आधारित भेदभाव को समाप्त किए बिना भारत में वास्तविक सामाजिक न्याय और समानता संभव नहीं है। उन्होंने दलितों, पिछड़े वर्गों और अन्य हाशिए पर पड़े समाज के हिस्सों के अधिकारों की

वकालत की और इन्हें मुख्यधारा में लाने के लिए संघर्ष किया। धर्म के संदर्भ में लोहिया जी का दृष्टिकोण भी प्रगतिशील था। वे धार्मिक कट्टरता और संकीर्णता के विरोधी थे और धार्मिक समभाव तथा सहिष्णुता पर जोर देते थे। उनका मानना था कि धर्म का उपयोग सामाजिक एकता के लिए होना चाहिए, न कि विभाजन और संघर्ष के लिए।

आज की भारतीय राजनीति में जहाँ जाति और धर्म के आधार पर राजनीतिक समीकरण बनाए जाते हैं, लोहिया के विचार हमें एक समरस और न्यायपूर्ण समाज की ओर मार्गदर्शन करते हैं। उनकी सोच हमें याद दिलाती है कि सामाजिक समानता और धर्मनिरपेक्षता को सुनिश्चित करना ही लोकतंत्र की सच्ची ताकत है। इसलिए, उनकी विचारधारा वर्तमान समय में भी सामाजिक और राजनीतिक विमर्श के लिए अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक बनी हुई है।

6. लोकतंत्र और संघीयता पर लोहिया के विचार

डॉ राम मनोहर लोहिया भारतीय राजनीति के एक प्रभावशाली विचारक और क्रांतिकारी नेता थे, जिन्होंने लोकतंत्र और संघीयता को लेकर गहन विचार प्रस्तुत किए। उनकी दृष्टि में लोकतंत्र केवल चुनावी प्रक्रिया तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सामाजिक एवं आर्थिक न्याय सुनिश्चित करने का माध्यम भी था। लोहिया का मानना था कि लोकतंत्र तभी सार्थक होता है जब वह आम जनता की भागीदारी और उनकी समस्याओं के समाधान पर केन्द्रित हो संघीयता के संदर्भ में लोहिया ने भारत को एक मजबूत संघीय ढांचे की आवश्यकता बताई, जिसमें राज्यों को स्वायत्तता देते हुए उनकी स्थानीय जरूरतों और सांस्कृतिक विविधताओं का सम्मान किया जाए। वे केंद्र और राज्यों के बीच संतुलन बनाए रखने में विश्वास रखते थे ताकि विकास और शासन प्रशासन दोनों ही प्रभावी ढंग से संचालित हो सकें। उनका यह भी तर्क था कि केंद्र की अत्यधिक केन्द्रीयकृत सत्ता लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए हानिकारक हो सकती है, जिससे राज्यों की स्वतंत्रता और जनता की आवाज दब सकती है।

आज की भारतीय राजनीति में लोहिया के ये विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। बढ़ती केन्द्रीयकृत नीतियों और राज्यों के अधिकारों के बीच टकराव के बीच, लोहिया का संघीयता और लोकतंत्र पर दृष्टिकोण हमें संतुलित और सहभागी शासन की ओर प्रेरित करता है। सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और स्थानीय स्वायत्तता की उनकी अवधारणाएं आज भी राजनीतिक विमर्श में नई दिशा प्रदान करती हैं और भारत के विकास में उनके विचारों का महत्व अनमोल बना हुआ है।

7. महिलाओं के अधिकार और लोहिया का योगदान

डॉ. राम मनोहर लोहिया ने महिलाओं के अधिकारों को भारतीय समाज में समानता और न्याय के महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में माना। उन्होंने सदैव यह आवाज उठाई कि महिलाओं को सिर्फ परिवार या सामाजिक दायित्वों तक सीमित नहीं रखा जाना

चाहिए, बल्कि उन्हें राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक सभी क्षेत्रों में समान अवसर मिलना चाहिए। लोहिया का मानना था कि समाज की प्रगति तभी संभव है जब महिलाएं पूरी तरह से स्वतंत्र और सशक्त हों।

उनके विचारों में महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और राजनीतिक भागीदारी को विशेष महत्व मिला। उन्होंने दलित और पिछड़े वर्ग की महिलाओं के उत्थान पर भी जोर दिया, क्योंकि वे समझते थे कि असली समानता तभी आएगी जब हर वर्ग की महिलाओं को उनका अधिकार मिले। लोहिया ने महिलाओं के लिए आरक्षण, समान वेतन, और घरेलू हिंसा के खिलाफ सख्त कानूनों का समर्थन किया।

वर्तमान भारतीय राजनीति में लोहिया के ये विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। आज भी महिलाओं के खिलाफ भेदभाव, असमानता और हिंसा की घटनाएँ आम हैं। कई राजनीतिक दल और सामाजिक संगठन लोहिया के सिद्धांतों को आधार बनाकर महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और संवर्धन के लिए काम कर रहे हैं। उनके विचार आज भी हमें याद दिलाते हैं कि महिलाओं के सशक्तिकरण के बिना कोई समाज पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो सकता। इसलिए, लोहिया का योगदान महिलाओं के अधिकारों के क्षेत्र में न केवल ऐतिहासिक है, बल्कि यह हमारे समय में भी प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

8. मध्यम वर्ग और मजदूर वर्ग का महत्व

डॉ राम मनोहर लोहिया की विचारधारा में मध्यम वर्ग और मजदूर वर्ग को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनका मानना था कि भारतीय समाज की प्रगति और समृद्धि के लिए इन दोनों वर्गों की भूमिका निर्णायक होती है। मध्यम वर्ग, जो शिक्षा, व्यवसाय और छोटे उद्योगों से जुड़ा होता है, समाज के आर्थिक और सामाजिक संतुलन को बनाए रखने में सहायक होता है। वहीं, मजदूर वर्ग, जो देश के उद्योगों और कृषि क्षेत्र की रीढ़ है, उनकी समस्याओं और अधिकारों की रक्षा करना सामाजिक न्याय के लिए अनिवार्य है। लोहिया जी ने हमेशा आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष किया। वे मानते थे कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से ही देश का उद्धार संभव नहीं है, बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता और वर्ग संघर्ष को समझना भी आवश्यक है। उन्होंने मध्यम वर्ग और मजदूर वर्ग को संगठित कर सामाजिक अन्याय और आर्थिक विषमता के खिलाफ आवाज उठाने का आह्वान किया। उनकी यह सोच आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि वर्तमान भारतीय राजनीति में आर्थिक असमानता बढ़ रही है और मध्यम तथा मजदूर वर्ग के मुद्दे लगातार उभर रहे हैं। आज के संदर्भ में, जब रोजगार, मजदूरी, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा के सवाल महत्वपूर्ण हो गए हैं, डॉ लोहिया के विचार हमें यह समझाते हैं कि बिना इन वर्गों की भागीदारी और कल्याण के देश का विकास अधूरा रहेगा। उनकी विचारधारा मध्यम वर्ग और मजदूर वर्ग को सशक्त बनाने पर जोर देती है, ताकि वे न केवल अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकें, बल्कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभा सकें। इस दृष्टि से, उनकी विचारधारा वर्तमान भारतीय राजनीति में भी उतनी ही प्रासंगिक और प्रेरणादायक है।

लोहिया का सप्त क्रांति का सिद्धांत

आधुनिक भारत के इतिहास में समाजवादी दर्शन के प्रखर नेता के रूप में डॉ राम मनोहर लोहिया का नाम लिया जाता है। डॉ. राममनोहर लोहिया पर कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एन्जिल के विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। बर्लिन में उन्होंने जर्मन भाषा में कार्ल मार्क्स का साहित्य पढ़ा। वे आजीवन मार्क्स से प्रभावित रहे। उन्होंने मार्क्सवाद को भारतीय परिस्थितियों और संस्कृति के अनुरूप ग्रहण करने का प्रयास किया। गांधी जी की अहिंसा, सत्याग्रह जैसी नीतियों से लोहिया अत्यधिक प्रभावित थे। भाषा, धर्म तथा जाति संबंधी प्रश्नों पर भी दोनों के विचारों में समानता थी। गांधी जी के प्रति अपार श्रद्धा का भाव रखने तथा अनेक मुद्दों पर विचारों की समानता होने के बावजूद लोहिया ने गांधी को पूर्ण नहीं माना। उन्होंने यह विचार व्यक्त किया है गांधी और मार्क्स की सबसे बड़ी कमी यह है कि यह समस्या के एक पक्ष को मानता है और दूसरा समस्या के दूसरे पक्ष को मानता है, तथा अपने दृष्टिकोण के अनुसार सुझाव प्रस्तुत करते हैं। लोहिया ने 'मार्क्स, गांधी एण्ड सोशलिज्म' नामक पुस्तक में मार्क्स और गांधी दोनों के सिद्धांतों में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया जिससे दोनों विचारकों के सिद्धांतों को सही दिशा प्रदान की जा सके। लोहिया जी की यही विचारधारा उनके समाजवादी विचारधारा का आधार बनी। उनके समाजवादी दर्शन को उनके सप्तक्रांति सिद्धांत के माध्यम से समझ सकते हैं।

लोहिया ने ऐसी पाँच प्रकार की असमानताओं को चिह्नित किया जिनसे एक साथ लड़ने की आवश्यकता है:

1. स्त्री और पुरुष के बीच असमानता ,
2. त्वचा के रंग के आधार पर असमानता ,
3. जाति आधारित असमानता,
4. कुछ देशों द्वारा दूसरे देशों पर औपनिवेशिक शासन,
5. आर्थिक असमानता।

इन पाँच असमानताओं के खिलाफ उनके संघर्ष ने पाँच क्रांतियों का गठन किया। इस सूची में उनके द्वारा दो और क्रांतियों को जोड़ा गया:

6. नागरिक स्वतंत्रता के लिये क्रांति (निजी जीवन पर अन्यायपूर्ण अतिक्रमण के खिलाफ) ।
7. सत्याग्रह के पक्ष में हथियारों का त्याग कर अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करने के लिये क्रांति।

ये सात क्रांतियाँ या सप्त क्रांति लोहिया के लिये समाजवाद का आदर्श थीं। व्यावहारिक तौर पर देखा जाए तो इसमें गांधी तथा मार्क्स दोनों हैं। लोहिया जी के विचारों को उनके इन्हीं सप्त क्रांति सिद्धांत के माध्यम से विस्तारपूर्वक देखा जाए तो हम स्पष्ट निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं कि उनका समाजवाद का सिद्धांत सदैव प्रासंगिक है।

1. स्त्री और पुरुष के बीच असमानता :

डॉ.लोहिया नर-नारी समानता के प्रबल पैरोकार थे। वे अक्सर स्त्रियों को पुरुष की पराधीनता के खिलाफ आवाज बुलंद करने की हिम्मत देते थे। उनका स्पष्ट कहना था कि स्त्रियों को बराबरी का दर्जा देकर ही एक स्वस्थ और सुव्यवस्थित समाज का निर्माण किया जा सकता है। वे पुरुषों द्वारा लादी गई नारी की पराधीनता और स्त्रियों द्वारा उसकी सहज स्वीकृति के सख्त विरुद्ध थे। उन्हें कतई पसंद नहीं था कि औरतें घूंघट और पर्दे में रहें और पुरुष समाज उनका शोषण और अनादर करता रहे। वे स्त्रियों को पुरुषों की तरह मुखर व निडर देखना चाहते थे। यही वजह है कि उन्हें ऐसी स्त्रियां पसंद थी जिनमें अपने स्वाभिमान की रक्षा और दमदारी से अपनी बात कहने की ताकत थी। उनका नारी आदर्श द्रौपदी थी जिसने अपने चीरहरण के समय पांडवों की चुप्पी पर सवाल दागा और कौरवों के अत्याचार के विरुद्ध तनकर खड़ी हुई। आज भी हमारे समाज में किसी न किसी रूप से स्त्रियों का शोषण हो रहा है उन्हें समानता का अधिकार नहीं दिया जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में लोहिया के समाजवादी सिद्धांत स्त्री-पुरुष की समानता के लिए क्रांति के सिद्धांत को अपनाने की आवश्यकता है जिससे हमारे समाज की बहुत सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है। क्योंकि जब तक आधी आबादी को पर्याप्त अधिकार नहीं मिलेंगे तब तक देश के विकास की बात करना या देश में समानता की बात करना बेईमानी होगी ।

2. त्वचा के रंग के आधार पर असमानता:

डॉ. लोहिया अफ्रीका, अमेरिका और यूरोप में हो रहे अश्वेतों पर अत्याचार को भली-भाँति उद्घाटित करते हैं। लोहिया जी ने 1964 में मिसिसिपी, अमेरिका के एक रेस्तरां में नस्लभेद के खिलाफ सत्याग्रह करके गिरफ्तारी दी थी। लोहिया ने लिखा है- “आज संसार में अफ्रीका जैसे देशों में जिस प्रकार के अत्याचार तथा अन्याय वहाँ के अश्वेतों के साथ किया जा रहा है, वह सम्पूर्ण सभ्यता पर कलंक है। दक्षिण अमेरिका तथा अमेरिका में ऐसी आबादियाँ हैं, जहाँ गोरे लोगों के बीच काले लोगों का प्रवेश निषिद्ध माना जाता है। अश्वेतों को पूर्णरूपेण मानवाधिकारों से वंचित रखा गया है।” लोहिया जी के इस कथन से स्पष्ट है कि वे रंगभेद को न सिर्फ भारतीय बल्कि वैश्विक संदर्भों में देखते हैं। रंगभेद जिस रूप में लोहिया जी के समय था, वैसा ही आज भी विश्व में अपने आपको ढकता-छिपाता निर्लज्जतापूर्वक विद्यमान है। भारत में इसका प्रभाव तो नहीं है लेकिन वैश्विक स्तर पर यह समस्या जरूर है अतः इसके समापन के लिए भी हमें लोहिया जी के सप्त क्रांति के मार्ग को अपनाना होगा ।

3. जाति आधारित असमानता

भारत में जाति प्रथा तथा वर्ण-व्यवस्था के नाम पर जो सामाजिक एवं आर्थिक असमानता हैं, उसे समाप्त करने के लिए क्रांति की जरूरत है। आज भी हमारे समाज में किसी न किसी रूप में जाति प्रथा मौजूद है और इस जाति प्रथा का कुप्रभाव समाज के विकास को प्रभावित करता है। डॉ. लोहिया ने हमेशा ही जाति से ऊपर उठकर एक ऐसे समाज की परिकल्पना की है जिस समाज में सभी एक समान हों यदि वर्तमान भारतीय समाज से जाति प्रथा का दंश खत्म हो जाए तो भारतीय समाज निश्चित तौर पर ऊपर उठेगा अतः हमें इसके लिए भी लोहिया जी के मार्ग पर चलते हुए क्रांति करने की आवश्यकता है। डॉ. लोहिया जाति

प्रथा के विरोधी थे, उनके अनुसार जाति प्रथा समाजवाद के मार्ग का मुख्य अवरोधक है। जाति समाज में असमानता उत्पन्न करती है। डॉ. राममनोहर लोहिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है "जीवन के बड़े-बड़े तथ्य जन्म, मृत्यु, शादी, भोज, ब्याह, और सभी रस्में, जाति के चौखट में होती है। ऐसे मौकों पर दूसरी जाति के लोग किनारे पर रहते हैं, जैसे वे तमाशबीन हों" जाति प्रथा के कारण निम्न वर्ग शोषण का शिकार बनते हैं, जाति उन्हें उन्नति के अवसरों से अलग रहती है।

4. कुछ देशों द्वारा दूसरे देशों पर औपनिवेशिक शासन,

परदेसी गुलामी के खिलाफ और स्वतन्त्रता तथा विश्व लोक-राज के लिए क्रान्ति पर डॉ लोहिया हमेशा जोर देते थे उनका विचार था कि जब तक वैश्विक स्तर पर किसी भी प्रकार के उपनिवेशवाद का प्रभाव रहेगा तब तक संपूर्ण विश्व के कल्याण की अवधारणा सही नहीं होगी। हमें हर स्तर पर समानता लाना होगा जो देश गरीब एवं किसी न किसी औपनिवेशिक शक्ति के गुलाम है उन्हें हर हाल में स्वतंत्रता दिलानी होगी ताकि इससे हर स्तर पर विश्व का कल्याण हो। लोहिया जी का यह विचार आज भी प्रासंगिक है क्योंकि आज वैश्विक स्तर पर उस तरह की गुलामी नहीं है जैसा कि लोहिया जी के समय था। वह साम्राज्यवाद या उपनिवेशवाद का गुलामी का दौर था। वर्तमान में पूंजीवादी नव साम्राज्यवाद की गुलामी के चंगुल में अनेक देश फंसता चले जा रहे हैं। जिसके लिए वह किसी ना किसी रूप से मजबूर हैं ऐसी परिस्थिति में हमें वैश्विक क्रांति के माध्यम से इन पूंजीवादी देशों को रोककर सभी देशों के बीच समानता लाने का प्रयास करना चाहिए।

5. आर्थिक असमानता:

भूमंडलीकरण से निजी संपत्तियों के केंद्रीकरण को कम करने के लिए डा. राम मनोहर लोहिया की संपत्ति का विकेंद्रीकरण सिद्धांत को अपनाया जा सकता है। डा. लोहिया पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच समानांतर एक समाजवादी विकल्प की स्थापना करना चाहते थे। वे संपत्ति पर समाज के स्वामित्व के पोषक थे लेकिन, संपत्ति का विकेंद्रीकरण चाहते थे। डा. लोहिया एडम स्मिथ द्वारा किये गये अंतरराष्ट्रीय श्रम सिद्धांत को अंग्रेजों को फायदा देने वाला सिद्धांत बताते हुए अपन श्रम विभाजन सिद्धांत दिया था। डॉ० राम मनोहर लोहिया का विचार था कि जब तक समाज में आर्थिक समानता नहीं आएगी तब तक समाज का विकास नहीं हो सकता है अतः हमें मार्क्सवाद के रास्ते पर चलकर समाज में आर्थिक समानता लाने की आवश्यकता है। लोहिया जी के दौर में जिस प्रकार का भारत था उसमें आज थोड़ा बहुत बदलाव हुआ है लेकिन आज भी हमारे समाज में अमीर गरीब के बीच की खाई बहुत बड़ी है अतः हमें इसके लिए भी सप्त क्रांति के मार्ग पर चलकर समानता लाने का प्रयास करना चाहिए।

6. नागरिक स्वतंत्रता के लिये क्रांति :

नागरिक स्वतंत्रता वह स्वतंत्रता है जो व्यक्ति को समाज और राज्य के सदस्य के रूप में प्राप्त होती है। नागरिक स्वतंत्रता की गारंटी राज्य देता है। लोहिया जी के दौर में ही नहीं बल्कि वर्तमान समय में भी यदि हम देखें तो हम पाते हैं कि किसी न किसी रूप से नागरिक की स्वतंत्रता उसे निर्बाध रूप से नहीं मिलती है। लोहिया जी ने नागरिक स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए सत्याग्रह मार्ग पर चलने की सलाह दी है। उनका कथन है कि “सरकार बदलने के लिए जिंदा कौमें 5 वर्षों का इंतजार नहीं करती”। अर्थात् सरकार के द्वारा अथवा किसी व्यक्ति के द्वारा यदि उसके नागरिकता संबंधी अधिकार में किसी प्रकार की बाधा पहुंचती है तो ऐसी परिस्थिति में लोहिया जी ने क्रांति करने की सलाह दी है।

7. सत्याग्रह के पक्ष में हथियारों का त्याग कर अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करने के लिये क्रांति:

लोहिया जी का यह विचार पूर्ण रूप से गांधीवाद से प्रभावित है उन्होंने मार्क्सवाद के बहुत सारे सिद्धांतों को माना लेकिन उनके समाजवाद में गांधीवाद का अहिंसा का तत्व समाहित है। लोहिया जी भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि दुनिया में हिंसा के बल पर कभी भी कोई लक्ष्य नहीं प्राप्त किया जा सकता है। अतः अहिंसा ही सर्वोत्तम मार्ग है जिसके बल पर लक्ष्य को बड़ी आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान विश्व में देखा जाए तो हिंसा एक बहुत बड़ी समस्या बनकर उभरी है। संपूर्ण विश्व में आज किसी न किसी रूप से लोग हिंसा से ग्रस्त हैं भारत की ही बात की जाए तो समाज में हिंसा धीरे-धीरे बढ़ती चली जा रही है। ऐसी परिस्थिति में हमें किसी भी आंदोलन को करते समय लोहिया के इस विचार को अवश्य अपनाना चाहिए कि हम किसी भी परिस्थिति में हिंसा की जगह सत्याग्रह के मार्ग का अनुसरण करें जिससे हमारे समाज की विविधता बची रहेगी तथा हिंसा से होने वाले समस्याओं से भी छुटकारा मिलेगा।

9. वर्तमान भारतीय राजनीति में लोहिया के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ राम मनोहर लोहिया के विचार आज भी भारतीय राजनीति में अत्यंत प्रासंगिक हैं। उन्होंने समाजवाद, समानता, और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को मजबूती से आगे बढ़ाया, जो आज के समय में भी हमारे लोकतांत्रिक तंत्र के मूल आधार हैं। लोहिया जी ने जातिगत भेदभाव, आर्थिक असमानता और सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई और दलित, पिछड़े तथा समाज के कमजोर वर्गों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। वर्तमान भारतीय राजनीति में जब सामाजिक विभाजन, आर्थिक विषमताएं और सत्ता के केंद्रीकरण की चुनौतियाँ बढ़ रही हैं, तब लोहिया के विचार हमें एक समावेशी, न्यायसंगत और संवेदनशील समाज की ओर मार्गदर्शन करते हैं। उनके विचार दलितों और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा, महिलाओं के सशक्तिकरण, और भ्रष्टाचार के विरुद्ध निरंतर संघर्ष की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। इसलिए, लोहिया के आदर्श और विचार न केवल हमारे राजनीतिक विमर्श के लिए प्रेरणा स्रोत हैं, बल्कि वे आज की राजनीति में सामाजिक न्याय और समानता की लड़ाई को आगे बढ़ाने के लिए भी एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं।

10. समाजिक आंदोलनों में लोहिया के सिद्धांतों का उपयोग

डॉ. राम मनोहर लोहिया ने समाजिक आंदोलनों को एक सशक्त माध्यम माना जो सामाजिक बदलाव और न्याय की दिशा में प्रभावी भूमिका निभा सकता है। उनके विचारों में समाजिक आंदोलनों का केंद्र हमेशा असमानता, अत्याचार और सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष रहा है। लोहिया के सिद्धांतों के अनुसार, सिर्फ राजनीतिक या आर्थिक सुधार पर्याप्त नहीं होते; बल्कि समाज के हर स्तर पर समानता और न्याय स्थापित करना आवश्यक है। आज के समय में, भारतीय राजनीति में विभिन्न समाजिक आंदोलनों जैसे जाति, वर्ग, लिंग और आर्थिक असमानताओं के खिलाफ संघर्षों में लोहिया के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। वे हमें यह सिखाते हैं कि बदलाव तभी संभव है जब समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्ग सक्रिय होकर अपनी आवाज उठाएं और व्यवस्था को चुनौती दें। लोहिया का यह मानना था कि समाजिक आंदोलन न केवल विरोध का स्वरूप हैं, बल्कि वे नीति निर्धारण और सामाजिक संरचनाओं में बदलाव लाने का एक प्रभावशाली तरीका भी हैं। वर्तमान में दलित अधिकार, महिला सशक्तिकरण, किसान आंदोलन, और बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर चल रहे आंदोलन लोहिया के सिद्धांतों की जीवंत प्रतिमा हैं। उनका यह विचार कि हर व्यक्ति को समान अवसर और सम्मान मिलना चाहिए, आज भी समाजिक आंदोलनों की नींव है। ऐसे में लोहिया के सिद्धांतों का उपयोग न केवल आंदोलनों को वैचारिक मजबूती प्रदान करता है, बल्कि उन्हें दिशा और उद्देश्य भी देता है, जिससे वे समाज में स्थायी बदलाव ला सकें।

11. भारतीय राजनीति में उनके विचारों का प्रभाव

डॉ. राम मनोहर लोहिया के विचार भारतीय राजनीति में आज भी गहराई से प्रभावशाली हैं। वे सामाजिक न्याय, समानता और आर्थिक पुनर्वितरण के प्रबल समर्थक थे, और उनकी ये विचारधाराएँ वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में भी प्रासंगिक बनी हुई हैं। विशेष रूप से उनकी जाति व्यवस्था और सामाजिक असमानताओं के खिलाफ आवाज़ आज के भारत में भी महत्वपूर्ण है, जहाँ जातिगत राजनीति और सामाजिक न्याय के मुद्दे निरंतर चर्चा में बने रहते हैं।

लोहिया का दलितों, पिछड़ों और अन्य वंचित वर्गों के अधिकारों के प्रति समर्पित दृष्टिकोण आज के कई राजनीतिक दलों और आंदोलनों का आधार है। उनकी सोच के अनुसार, सशक्त और समावेशी लोकतंत्र तभी संभव है जब हर समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों को राजनीतिक और सामाजिक मंच मिले। इसी कारण से आज भी उनकी नीतियाँ और विचार दलित उथान, आरक्षण नीति और सामाजिक समरसता जैसे विषयों में मार्गदर्शक भूमिका निभाते हैं।

इसके अलावा, लोहिया ने स्वदेशी अर्थव्यवस्था, छोटे किसानों और मजदूरों के उत्थान पर भी जोर दिया था, जो आज के वैश्वीकरण और आर्थिक असमानताओं के दौर में एक महत्वपूर्ण संदर्भ प्रस्तुत करता है। उनकी विचारधारा आज के युवा नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनी हुई है, जो भारतीय राजनीति को अधिक न्यायसंगत और समावेशी बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार, डॉ राम मनोहर लोहिया के विचार न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे आधुनिक भारत की राजनीति को दिशा देने वाले मजबूत स्तंभ भी हैं।

12. लोहिया के विचारों के संदर्भ में वर्तमान नीतिगत चुनौतियां

डॉ राम मनोहर लोहिया के विचार आज की भारतीय राजनीति में नीतिगत चुनौतियों को समझने और समाधान खोजने के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं। लोहिया समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के अधिकारों एवं समानता पर जोर देते थे। वर्तमान समय में जहां आर्थिक असमानता, जातिगत भेदभाव, और सामाजिक न्याय की समस्याएं बनी हुई हैं, वहां लोहिया के विचार हमें नीतिगत सुधारों की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। उनका सामाजिक समानता का सिद्धांत हमें याद दिलाता है कि विकास तभी सार्थक होगा जब वह समाज के हर वर्ग तक पहुँचे, न कि केवल कुछ चुनिंदा हिस्सों तक सीमित रहे। आज की नीतिगत चुनौतियां जैसे बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य में असमानता, और दलित-अदिवासी समुदायों की समस्याएं लोहिया के लोकतांत्रिक समाज और न्यायपूर्ण व्यवस्था के विचारों के माध्यम से बेहतर समझी जा सकती हैं।

लोहिया ने केंद्र और राज्य सरकारों दोनों को सामाजिक कल्याण के लिए सक्रिय भूमिका निभाने का आग्रह किया था। उनकी सोच के अनुसार, नीति निर्माण में सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता को सर्वोपरि रखना आवश्यक है। इसलिए, जब भी हम वर्तमान नीतिगत चुनौतियों का सामना करते हैं, तो लोहिया के विचार हमें एक समावेशी और न्यायसंगत भारत के निर्माण के लिए प्रेरित करते हैं।

13. युवा पीढ़ी के लिए लोहिया के विचारों का महत्व

डॉ राम मनोहर लोहिया के विचार युवा पीढ़ी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे समाज के विषमताओं और अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। लोहिया जी ने जाति, वर्ग, और लैंगिक भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई और समानता, न्याय एवं स्वतंत्रता के मूल्यों पर जोर दिया। वर्तमान भारतीय राजनीति में जब युवा समाज में बढ़ती बेरोजगारी, शिक्षा की असमानता और सामाजिक विभाजन जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं, तब लोहिया के विचार उन्हें सतत संघर्ष और बदलाव के मार्ग पर प्रेरित करते हैं।

उनकी सोच युवाओं को न केवल अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है, बल्कि सामाजिक एकता और लोकतंत्र की स्थिरता को भी मजबूत बनाती है। लोहिया जी की आलोचनात्मक दृष्टिकोण और सामाजिक न्याय के लिए उनकी प्रतिबद्धता आज के परिप्रेक्ष्य में युवाओं को राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने और बदलाव लाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है। इसलिए, युवाओं के लिए लोहिया के विचार केवल एक राजनीतिक दर्शन नहीं, बल्कि एक व्यवहार्य क्रांति की नींव हैं, जो उन्हें वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों से निपटने की ताकत देते हैं।

14. लोहिया के विचार और भारत का भविष्य

डॉ राम मनोहर लोहिया के विचार भारतीय राजनीति और समाज के लिए आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उन्होंने सामाजिक समानता, आर्थिक न्याय और जाति-भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई, जो आज के भारत में भी महत्वपूर्ण मुद्दे बने हुए हैं। लोहिया का मानना था कि असमानताओं को दूर करने और एक न्यायसंगत समाज बनाने के लिए सिर्फ नीतियाँ ही नहीं, बल्कि जनजातीय चेतना और समर्पित संघर्ष की आवश्यकता है। उनकी विचारधारा आज के राजनीतिक परिदृश्य में दलितों, पिछड़ी जातियों और अन्य वंचित वर्गों के अधिकारों की रक्षा और सशक्तिकरण के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

भारत के भविष्य के संदर्भ में लोहिया की सोच हमें याद दिलाती है कि विकास केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक समानता भी उतनी ही जरूरी है। वर्तमान राजनीतिक नेतृत्व जब भी इन मूल्यों को अपनाता है, वह एक समावेशी और प्रगतिशील भारत की दिशा में कदम बढ़ाता है। इसलिए, डॉ लोहिया के विचार न केवल इतिहास का हिस्सा हैं, बल्कि वे हमारी वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत भी हैं।

संक्षेप में कहा जाए तो, लोहिया का संदेश आज भी हमें समानता, न्याय और सद्भाव की ओर प्रेरित करता है, जो भारत के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखता है।

15. निष्कर्ष:

डॉ राम मनोहर लोहिया की विरासत और आधुनिक भारत

डॉ राम मनोहर लोहिया भारतीय राजनीति के एक प्रभावशाली विचारक और क्रांतिकारी नेता थे, जिनके विचार आज भी हमारी सामाजिक और राजनीतिक संरचना में गहराई से प्रासंगिक हैं। उनकी विरासत केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने सामाजिक न्याय, समानता, और सत्ता के विकेंद्रीकरण जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। लोहिया जी ने जाति, वर्ग,

और आर्थिक असमानताओं के खिलाफ आवाज़ उठाई और एक ऐसा समाज बनाने का सपना देखा जहाँ हर व्यक्ति को समान अवसर और सम्मान मिले। आधुनिक भारत में, जब हम असमानताओं, भ्रष्टाचार और केंद्रीकृत सत्ता की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, तब डॉ लोहिया के विचार हमें एक नई दिशा प्रदान करते हैं। उनकी विरासत हमें याद दिलाती है कि सच्चा लोकतंत्र तभी संभव है जब सत्ता को निचले स्तर तक पहुँचाया जाए और प्रत्येक नागरिक की भागीदारी सुनिश्चित हो। इसके अलावा, उनकी विचारधारा आज की राजनीतिक व्यवस्थाओं में सामाजिक न्याय के लिए किए गए संघर्षों का मार्गदर्शन करती है।

आज देश में गैर-बराबरी, भ्रष्टाचार, भुखमरी, गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, कुपोषण, जातिवाद, क्षेत्रवाद और आतंकवाद जैसी समस्याएं गहराई हैं। यह सही है कि देश तरक्की का आसमान छू रहा है लेकिन नैतिक और राष्ट्रीय मूल्यों में व्यापक गिरावट के कारण अमीरी-गरीबी की खाई लगातार चौड़ी होती जा रही है। जनवादी होने का मुखौटा चढ़ा रखी सरकारें बुनियादी कसौटी पर विफल हैं और सामाजिक, आर्थिक चुनौतियों से निपटने में नाकाम हैं। नागरिक समाज के प्रति रवैया संवेदहीन है। ऐसी परिस्थिति में हमें लोहिया जी की विचारधारा पर चलने की आवश्यकता है। लोहिया जी ने बेहतरीन समाज निर्माण के लिए सत्तातंत्र को चरित्रवान होना जरूरी बताया था। उनका निष्कर्ष था कि सत्यनिष्ठा और न्यायप्रियता पर आधारित शासनतंत्र ही लोक व्यवस्था के लिए श्रेयस्कर साबित हो सकता है। लोहिया भारतीय भाषाओं को समृद्ध होते देखना चाहते थे। उन्हें विश्वास था कि भारतीय भाषाओं के समृद्ध होने से देश में एकता मजबूत होगी। लोहिया ने नाइंसाफी और गैर-बराबरी खत्म करने के लिए देश के समक्ष सप्तक्रांति का दर्शन प्रस्तुत किया। नर-नारी समानता, रंगभेद पर आधारित विषमता की समाप्ति, जन्म तथा जाति पर आधारित असमानता का अंत, विदेशी जुल्म का खात्मा तथा विश्व सरकार का निर्माण, निजी संपत्ति से जुड़ी आर्थिक असमानता का नाश तथा संभव बराबरी की प्राप्ति, हथियारों के इस्तेमाल पर रोक और सिविल नाफरमानी के सिद्धांत की प्रतिस्थापना तथा निजी स्वतंत्रताओं पर होने वाले अतिक्रमण का मुकाबला। इस सप्तक्रांति में लोहिया के वैचारिक और दार्शनिक तत्वों का पुट है जो हर दौर में प्रासंगिक है। भारत में समाजवादी विचारधारा को आधार प्रदान करने में डॉ० राममनोहर लोहिया का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। लोहिया ने एशियाई समाजवाद का मार्ग प्रशस्त किया है।

इस प्रकार, डॉ राम मनोहर लोहिया की विरासत न केवल इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की राजनीति के लिए भी एक प्रेरणा स्रोत है। उनके विचार हमें याद दिलाते हैं कि सतत सामाजिक परिवर्तन और समावेशी विकास के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं, ताकि भारत एक न्यायसंगत और प्रगतिशील राष्ट्र बन सके। डॉ राम मनोहर लोहिया के विचार आज भी भारतीय राजनीति में अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक हैं। उनके समाजवादी सिद्धांत, समानता और न्याय के प्रति उनका अटल विश्वास, वर्तमान समय में भी हमें सामाजिक और आर्थिक असमानताओं से लड़ने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। लोहिया जी के विचारों को समझकर और उन्हें हमारे राजनीतिक और सामाजिक परिवेश में आत्मसात करके ही हम एक समतामूलक और न्यायपूर्ण भारत का निर्माण कर सकते हैं। इसलिए, उनके आदर्शों को याद रखना और उन्हें वर्तमान राजनीतिक संदर्भ में लागू करना हर नागरिक का कर्तव्य है, ताकि हम एक बेहतर और सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकें।

सन्दर्भ सूची:-

1. मुख्तार अनीश, भारतीय समाजवाद के शिल्पी ,
समाजवादी अध्ययन एवं शोध संस्थान, लखनऊ, 2001, पृ0 144-145 ।
2. डॉ0 डी0एस0 यादव , प्रमुख राजनीतिक विचारक डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई-दिल्ली 2012, पृ0 222- 223।
3. जीवन मेहता , भारतीय राजनीतिक चिंतन, एस.बी.पी.डी. पब्लिसिंग हाउस, आगरा , 2015, पृ0 197।
4. सुषमा गर्ग , भारतीय राजनीतिक चिंतन ,
अग्रवाल पब्लिकेशन , अगरा, 2015, पृ0 295 ।
5. समकालीन राजनीतिक विचारक - डॉ. वी. सिंह गहलौत अर्जुन पब्लिसिंग हाउस, नई-दिल्ली, 2000, पृ. 325।
6. ओमप्रकाश गावा, राजनीतिक विचारक – विश्वकोश,
नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई-दिल्ली, 2001, पृ. 186।
7. बी.एल. फडिया , भारतीय राजनीतिक चिंतन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2008, पृ. 350- 351 8. कुमार, & मुकेश.
(2016). डॉ. राम मनोहर लोहिया समग्र ग्राम विकास योजना एवं सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन: विशेष संदर्भ जिला चंदौली,
उत्तर प्रदेश A study on Dr. Ram Manohar Lohia Samagra Gram Vikas Yojna and Social Change: With reference to
Chandauli district of UP.
9. Lohia, R. M. (2017). Struggle for Civil Liberties.
10. Sheth, D. L. (2002). Ram Manohar Lohia on caste in Indian politics. Caste and Democratic Politics in.
11. Pathak, D. N., & Jha, D. (2021). Ram Manohar Lohia. In Revisiting Modern Indian Thought (pp. 279-297).
Routledge India.
12. Singh, M. K. Great Nationalist Of India: Ram Manohar Lohia. Shri Sai Printographers.
13. Deepak, P. K. (2014). Dr. Ram Manohar Lohia: A Great Indian Freedom Fighter. JONER-Journal of North-East
Region, (2), 165-172.
14. Gautam, R. K., Singh, Y., Gupta, A., Arora, P., Khurana, A., & Chitkara, A. (2020). The profile of cytokines
(IL-2, IFN- γ , IL-4, IL-10, IL-17A, and IL-23) in active alopecia areata. Journal of Cosmetic Dermatology, 19(1),
234-240.